॥ श्री गणेशाय नमः॥

चन्द्रमा (सोम)

चन्द्रमा का स्वरूप :- चंद्रामा का वर्ण गौर है। चंद्र देव के वस्त्र, अश्व और रथ तीनों श्वेत हैं, इनका वाहन दस घोड़ों वाला रथ है इस रथ में तीन चक्र हैं, भगवान चन्द्रमा कमल के आसन पर विराजमान हैं, इनके सिर पर सुन्दर स्वर्णमुकुट तथा गले में मोतियों की माला है, इनके एक हाथ में गदा है और दूसरा हाथ वरमुद्रा में है।
भगवान श्रीकृष्ण ने इन्ही के वंश में अवतार लिया था। इसीलिए वे चन्द्र की सोलह कलाओं से युक्त थे। चन्द्रमा का विवाह राज दक्ष की सत्ताईस कन्याओं से हुआ। ये कन्याएँ सत्ताईस नक्षत्रा के रूप में भी जानी जाती हैं। इनके पुत्र का नाम बुध है। चन्द्र को नक्षत्रों का स्वामी भी कहा जाता है। ये महर्षि अत्रि और अनुसूया के पुत्र हैं।

रात्रिबली, अपराह्नबली, पश्चिम मुख, ह्रस्व आकार, वैश्यवर्ण, सरीसृप स्वामी, सौम्यगुण, जलचर, शीर्षोदय, कफ-प्रकृति, लवण-स्वाद, समदृष्टि, रजत स्वामी।

चन्द्रमा ग्रह :- कर्क राशि का स्वामी है। वृष के ३ अंश पर उच्च और वृश्चिक के ३ अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि वृष है। इसकी महादशा १० वर्ष की होती है। २४ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

चन्द्र ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से १, ३, ६, ७, १० और ११ वे स्थान में शुभ होता है। २, ५, ९ में पूज्य तथा ४, ८, १२ में अशुभ होता है।

सोमवार व्रत विधि :- सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर दही भात का भोजन करे, यथाशक्ति मन्त्रो का जप करे और मंगलवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद पारण करे।

चन्द्र ग्रह की शांति के लिए शिव अर्चना करना चाहिए।

दान पदार्थ :- बांसपात्र, चावल, श्वेत-पुष्प, चीनी, रजत, बैल, शंख, दही, मोती, कर्पूर, वरण, दक्षिणा आदि का दान करना चाहिए।

धारणार्थ रत्न :- मोती।

धारणार्थ औषधि :- खिरनी की जड़।

देवता :- चन्द्रमा ग्रह के अधिदेवता अप् तथा प्रत्यधिदेवता उमा हैं।

ध्यान :- श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युति दण्डधरो द्विबाहुः।
चन्द्रोऽमृतात्मावरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातुतेजः॥
(श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः। गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्तव्यो वरदः शशी॥)

१८ चन्द्र यन्त्रम्

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ सौँ सोमाय नमः। जपसंख्या ११,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ श्राँ श्रीँ श्रौँ सः चन्द्रमसे नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ऐँ क्लीँ सोमाय नमः।

सोम गायत्री :- ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमही तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

पुराणोक्त जप मंत्र :- दधि शङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१] :- ॐ इमं देवा इति मन्त्रस्य गौतम ऋषिः, द्विपदाविराट् छन्दः, सोमो देवता, असपत्नमिति बीजम् सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ गौतमऋषये नमः शिरसि।
ॐ द्विपदा विराट्छन्दसे नमः मुखे।
ॐ सोमदेवतायै नमः हृदये।
ॐ असपत्नबीजाय नमः गुह्ये।
ॐ सोम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास [३]:- ॐ इमं देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वमित्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ महतेक्षत्रायेति तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ महतेज्ज्यैष्ठ्ययेति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ महतेजानराज्जयायेन्द्रियायेत्यनामिकाभ्यां नमः।
ॐ इममुष्यपुत्रममुष्यै इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ
राजेति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ इमन्देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वम् हृदयाय नमः।
ॐ महतेक्षत्राय शिरसे स्वाहा।
ॐ महतेज्ज्यैष्ठ्याय शिखायै वषट्।
ॐ महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय कवचाय हुम्।
ॐ इममुष्यपुत्रममुष्यै नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ पुत्रमस्यैविशऽएष वोमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ
राजा अस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ इमं देवा असपत्नꣳ सुवद्ध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्र मस्यै व्विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳराजा॥ ॐ सोमाय नमः॥

चन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रम्

विनियोग-अस्य श्रीचन्द्राष्टविंशतिनामस्तोत्रस्य गौतमऋषिः सोमो देवता विराट्छन्दः, चन्द्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

चन्द्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते। यानि श्रुत्वा नरो दुःखान्मुच्यते नात्र संशयः॥१॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लोरब्जः कुमुदप्रियः। लोकप्रियः शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपतिः॥२॥
शशी हिमकरो राज द्विजराजो निशाकरः। आत्रेय इन्दुः शीतांशुरौषधीशः कलानीधिः॥३॥
जैवातृको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसंभवः। नक्षत्रनायकः शंभुः शिरश्चूड़ामणिर्विभुः॥४॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि य पठेत्। प्रत्यहं भक्ति संयुक्तस्तस्य पीडा निनश्यति॥५॥
तद्दिने च पठेद्यस्तु लभेत्सर्वं समीहितम्। ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चन्द्रबलं सदा॥६॥

॥ इति श्रीचन्द्राष्टाविंशतिनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

चन्द्रकवचम्

विनियोग-अस्य श्रीचन्द्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य गौतम ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री चन्द्रो देवता, चन्द्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

समं चतुर्भजं वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्। वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम्॥१॥
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभं। शशी पातु शिरोदेशं भालंपातु कलानिधिः॥२॥
चक्षुषी चन्द्रमाः पातु श्रुती पातु निशापतिः। प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबांधवः॥३॥
पातु कंठं च मे सोमः स्कंधौ जैवातृकस्तथा। करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः॥४॥
हृदयं पातु मे चन्द्रो नाभिं शंकरभूषणः। मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः॥५॥
ऊरू तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा। अब्धिजः पातु मे जङ्घे पातु पादौविधुः सदा॥६॥
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चंद्रोऽखिलं वपुः। एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति मुक्ति प्रदायकं।
यः पठेन्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥७॥

॥ इति श्रीचन्द्र कवचम् सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**-- विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द **"विनियोगः"** बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को **"आचमनी"** कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)

ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

[४] **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com